आचार्य अमितगति प्रथम

जीवन-परिचय : जैन साहित्य में अमितगति नाम के दो आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं। ये अमितगति प्रथम हैं जो नेमिषेण के गुरु तथा देवसेनसूरि के शिष्य हैं। ये ज्ञान और चारित्र की असाधारण मूर्ति थे। इनका व्यक्तित्व महान था।

अमितगति द्वितीय ने सुभाषितरत्नसन्दोह को विक्रम संवत् 1050 में पौष शुक्ल पंचमी के दिन समाप्त किया है और पंचसंग्रह को विक्रम संवत् 1073 में पूरा किया है, अतएव अमितगति प्रथम का समय इनसे दो पीढ़ी पूर्व होने से विक्रम संवत् 1000 निश्चित होता है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा रचित एकमात्र ग्रन्थ योगसारप्राभृत है।

1. योगसारप्राभृत : योगसारप्राभृत बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जो भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो चुका है। यह ग्रन्थ 9 अधिकारों में विभक्त है। इसमें सात तत्त्व और चारित्र आदि का वर्णन किया है। इन अधिकारों में योग और योग से सम्बन्ध रखने वाले आवश्यक विषयों का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। पूरा ग्रन्थ अध्यात्म रस से सराबोर है। उसके पढ़ने पर नयी अनुभूतियाँ सामने आती हैं। ग्रन्थ की भाषा सरल संस्कृत है। ग्रन्थ पर कुन्दकुन्दाचार्य के अध्यात्म ग्रन्थों का पूर्ण प्रभाव है। ग्रन्थ का अध्ययन और मनन जीवन की सफलता का कारण है। ग्रन्थ बहुत महत्त्वपूर्ण है।